अनौपचारिका

समकालीन शिक्षा-चिन्तन की मासिक पत्रिका

वर्ष : 52 अंक : 5 वैशाख–ज्येष्ठ वि.सं. 2082 मई, 2025 पृष्ठ–28 RNI **43602/77** ISSN No.**2581-981**x

अज़ीम शायर शीन काफ़ निज़ाम पद्मश्री से अलंकृत

भगवान बुद्ध की पांचवी शताब्दी की प्रतिमा से दमकते राष्ट्रपति भवन के भव्य गणतंत्र मंडप में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की उपस्थिति में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने अज़ीम शायर तथा राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति के सदस्य शीन काफ़ निज़ाम को उनके साहित्य तथा शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय सेवाओं के लिए 'पद्मश्री' से अलंकृत किया।

गत 28 अप्रेल को प्रदान किये गये अलंकरण में उनके लिए कहा गया है कि वे ख्यातनाम उर्दू कवि, आलोचक और साहित्यिक विद्वान है तथा उनकी शायरी में अरबी, फ़ारसी, हिंदी और संस्कृत परंपरा का मेल मिलता है।

राष्ट्रपति ने तालियों की गड़गड़ाहट के बीच निज़ाम साहब के सीने पर 'पद्मश्री' का मैडल टांगा और उन्हें इस नागरिक अलंकरण की सनद प्रदान की।

काले जूते सफेद पायजामे, पर क्रीम रंग के चोले तथा उस पर सफेद जाकेट और गले में दुपट्टा डाले 78 वर्षीय निज़ाम साहब ने यह अलंकरण गरिमा से स्वीकार किया।

देश विदेश नें आधुनिक उर्दू शायरी के सिरमोर माने जाने वाले निज़ाम साहब का अदीबों की दुनिया में अपना अलग रुतबा है, किन्तु वे अपने शहर जोधपुर में अपनों के साथ ठेठ मारवाड़ी में बतियाते हुए दिख जाते हैं।

उनके लिए अज्ञेय ने उनके लिए कहा था ''सीधा-साधा मानवीय सत्य कितना बड़ा चमत्कार होता है, यह वह जानते हैं। और उसी को अपने भीतर से पाना, उसी को दूसरे के भीतर उतार देना उनका अभीष्ट है।'' मक़बूल शायर गुलज़ार कहते हैं ''कई सराब (मृगतृष्णा) मिले रास्ते में और एक सराब में पानी से भरी झील मिली, उसका नाम है निज़ाम।''

अहिंसार्थाय भूतानां धर्मप्रवचनं कृतम ।
यः स्वादहिंसासम्पृक्तः स धर्म इति निश्चयः ।।

– महाभारत, शांतिपर्व 109.12

धर्म की सभी बातें सभी जीवों को हिंसा से मुक्ति दिलाने के उद्देश्य से हैं, अहिंसा। इसलिए, जिसमें हिंसा न करने का लक्षण है, वह धर्म है। यह निश्चित है।

समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सहचित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि।।
समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।। ऋग्वेद

अनौपचारिका

समकालीन शिक्षा-चिन्तन की पत्रिका

वर्ष : 52 अंक :5 वैशाख-ज्येष्ठ वि.सं. 2082 मई, 2025 मूल्य : पचास रुपये

क्र म

वाणी

3. महाभारत की सीख
संपादकीय

5. सब साथ चलें और कलह न करें...
लेख

7. कोई झूठ को सच का आईना तो दिखाए
– वेदव्यास

10. विश्वविद्यालय की डिग्री हमेशा सफलता की कुंजी नहीं होती **– मारिया पेट्राकिस**

12. एआई की चुनौती और कक्षा में रचनात्मकता
– अम्मेल शेरोन

सीख

14. धरती का रहस्य **– गौहर रज़ा**

लेख

16. रेत समाधि : उपन्यास या गांधी से माफ़ी...
– डॉ. अरविंद कुमार पुरोहित

18. **टिप्पणी**
आधुनिक पुरुषत्व का विरोधाभास!
– संतोष देसाई

21. बुरा नारीवादी होना इतना बुरा भी नहीं!
– रोक्सेन गे

बात-चीत

23. प्रकृति के नियमों को अलौकिक बनाने की कोशिश न करें! **– गेरार्ड 'टी हूफ्ट**

स्मृति शेष

26. डॉ. जलालुद्दीन, पोप फ्रांसिस

27. मोहियुद्दीन

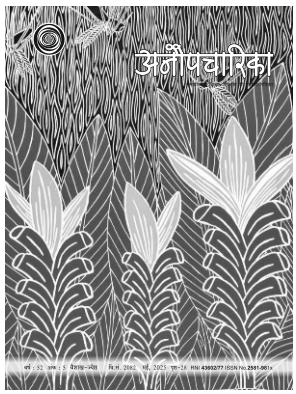

राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति
7-ए, झालाना डूंगरी संस्थान क्षेत्र,
जयपुर-302004
फोन : 2700559, 2706709, 2707677
ई-मेल : raeajaipur@gmail.com
www.raea.in

संरक्षक :
श्रीमती आशा बोथरा
संपादक :
राजेन्द्र बोड़ा
प्रबंध संपादक :
दिलीप शर्मा

संपादकीय

सब साथ चलें और कलह न करें इसे मानने को बहुत लोग तैयार नहीं

ॐ सहनाववतु, सहनौ भुनक्तु, सह वीर्यं करवावहै।
तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषा वहै।

इस मंत्र का अर्थ है विश्व में हम सब साथ चलें, साथ बोलें, और साथ मिल कर वीरोचित कार्य करें। अच्छा ज्ञान प्राप्त कर तेजस्वी बनें, हमारे बीच विद्वेष (कलह) न हो। ज्ञान की यह हमारी सनातन परंपरा है। आश्चर्य होता है कि इसके बावजूद हम भारतीय लोग इतनी आसानी से शत्रुतापूर्ण समूहों में क्यों विभाजित हो जाते हैं, जिनमें से प्रत्येक की अपनी धार्मिकता निश्चित है।

बहुत से लोग मानते हैं कि मानव जीवन के दो सबसे महत्वपूर्ण, कष्टप्रद और विभाजनकारी विषय हैं – राजनीति और धर्म। राजनीति और धर्म दोनों हमारे अंतर्निहित नैतिक मनोविज्ञान की अभिव्यक्ति हैं। उस मनोविज्ञान की समझ लोगों को एक साथ लाने में मदद कर सकती है। मगर दुर्भाग्य से अधिकतर उपक्रम इस समझ को बिगाड़ने के ही होते नज़र आते हैं।

विद्वान लोग यह भी कहते हैं कि मानव स्वभाव न केवल आंतरिक रूप से नैतिक है, बल्कि यह आंतरिक रूप से आलोचनात्मक और निर्णयात्मक भी है। यह भी कहा जाता है कि नैतिकता वह असाधारण मानवीय क्षमता है जिसने विश्व में सभ्यता को संभव बनाया। चिकित्सा और समाजशास्त्र के अध्येता कहते हैं कि मानव मस्तिष्क जिस प्रकार भाषा और संगीत के लिए डिज़ाइन किया हुआ है उसी प्रकार वह नैतिकता के लिए भी डिज़ाइन किया हुआ है। वे कहते हैं कि हमारा दिमाग मूलतः नेक है जिसने इंसानों को आपसी मानवीय बंधन में जोड़ कर बड़े सहकारी समूहों, जनजातियों और राष्ट्रों के निर्माण को संभव बनाया है। लेकिन साथ ही, हमारे धार्मिक दिमाग हमारे सहकारी समूह में हमेशा नैतिक संघर्ष से अभिशप्त रहे हैं। भले ही नैतिक जवाबदेही की प्रणालियां हम सभी को कुछ अति करने से रोकती हैं फिर भी कुछ लोग हिंसक तरीकों से धार्मिक लक्ष्य पाने को उचित ठहराते हुए मिल जाते हैं। यह लक्ष्य पाना उनकी कोई बहुत रूमानी कल्पना नहीं होती है, बल्कि उन्हें लगता हैं कि वे इसे वास्तव में हासिल कर सकते हैं।

यह भी हैं कि नैतिक अंतर्ज्ञान स्वतः उत्पन्न होता है। लोगों में समान रूप से और लगभग तुरंत उत्पन्न होता है। सही और गलत के तर्क में जाने से पहले नैतिकता का अंतर्ज्ञान हमारे बाद के तर्क को आगे बढ़ाता हैं। प्रत्येक मनुष्य इसी प्रकार अपनी नैतिकता का निर्धारण

करता है। सबके पास अपने-अपने तर्क होते हैं। हालांकि तर्क एक ऐसी चीज़ है जिसका उपयोग हम सच्चाई का पता लगाने के लिए करते हैं। मगर जब लोग हमसे असहमत होते हैं तब हम बहुधा इस बात से निराश होकर इस तर्क से सोचने लगते हैं कि असहमति वाले लोग कितने नासमझ हैं। ऐसा सोचते हुए हम कितने पक्षपाती और अतार्किक हो जाते हैं वह हमें नहीं दिखता। इसे हम यदि इस तरह समझें कि नैतिक तर्क एक कौशल हैं जिसे हम इंसानों ने अपने सामाजिक एजेंडे को आगे बढ़ाने के लिए विकसित किया है तो चीजें बेहतर समझ में आएंगी। तब हम जान पाएंगे कि अपने कार्यों को सही ठहराने का यह कौशल है जो उन समूहों की रक्षा करने के लिए बनाया गया है जिनसे हम जुड़े होते हैं।

कहते हैं मन, हाथी पर सवार महावत की तरह होता है। महावत का काम हाथी को हांकना होता है। यह महावत हमारा सचेत तर्क है – शब्दों और छवियों की धारा, जिसके बारे में हम पूरी तरह से अवगत हैं। हाथी हमारी अन्य 99 प्रतिशत मानसिक प्रक्रियाएं हैं जो जागरूकता के बाहर होती हैं, लेकिन वास्तव में हमारे अधिकांश व्यवहार को नियंत्रित करती हैं।

कई बार लगता है कि हम उन लोगों को बेहतर ढंग से मना सकते हैं जिन पर तर्क का कोई असर नहीं होता। नैतिकता में नुकसान और निष्पक्षता के अलावा और भी बहुत कुछ है। एक मनोविज्ञानी का कहना है कि धर्मी मन छह स्वाद कलिकाओं वाली जीभ की तरह होता है। धर्मनिरपेक्ष पश्चिमी नैतिकताएं उन व्यंजनों की तरह हैं जो जीभ के इनमें से सिर्फ एक या दो रिसेप्टरों को सक्रिय करने की कोशिश करते हैं – या तो वे नुकसान के बारे में चिंता करते हैं या फिर पीड़ा, निष्पक्षता और अन्याय के बारे में चिंताएं रखते हैं। लेकिन लोगों के पास कई अन्य शक्तिशाली नैतिक अंतर्ज्ञान भी होता हैं, जैसे कि स्वतंत्रता, वफादारी, अधिकार और पवित्रता का संबंध। नैतिकता बांधती और अंधा करती है। जीव स्नायु विज्ञानी अपने अध्ययनों में बताते हैं कि मनुष्य 90 प्रतिशत चिम्पांजी और 10 प्रतिशत मधुमक्खी हैं। व्यक्ति प्रतिस्पर्धा करते हैं। प्रत्येक समूह में अलग-अलग व्यक्ति हैं, और हम उन प्राइमेट्स के वंशज हैं जिन्होंने उस प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया था। अध्येता इसे हमारे स्वभाव का बदसूरत पक्ष बताते हैं, जो आमतौर पर हमारी विकासवादी उत्पत्ति के बारे में किताबों में बताया जाता है।

हम वास्तव में स्वार्थी और पाखंडी हैं जो सद्गुणों का दिखावा करने में इतने कुशल हो गये हैं कि हम स्वयं को भी मूर्ख बना लेते हैं। जैसे-जैसे मानव समूह अन्य समूहों के साथ प्रतिस्पर्धा करते गए, मानव स्वभाव भी आकार लेता गया। डार्विन ने बहुत पहले कहा था कि सबसे एकजुट और सहयोगी समूह, आम तौर पर, स्वार्थी व्यक्तिवादियों के समूहों को हरा देते हैं। डार्विन के यह विचार 1960 के दशक में ठुकरा दिए गये थे, लेकिन अब फिर लोकप्रिय हो रहे हैं। नवीनतम अध्ययन उनके विचारों को वापस काम में ले रहे हैं, और इसके निहितार्थ गहरे हैं। वास्तव में हम हमेशा स्वार्थी और पाखंडी नहीं होते हैं। हमारे पास, विशेष परिस्थितियों में, अपने क्षुद्र स्वार्थों को दबा कर एक बड़े शरीर में कोशिकाओं की तरह, या छत्ते में मधुमक्खियों की तरह बने रहने की क्षमता है, जो समूह की भलाई के लिए काम करते हैं। ये अनुभव अक्सर हमारे जीवन के सबसे प्रिय अनुभवों में से एक होते हैं, हालांकि हमारा अहंकार हमें अन्य नैतिक व्यवहार से दूर कर सकता है।